वार्तालाप नं.474, ताडेपल्लिगुडम, आंध्र प्रदेश, दिनांक 28.12.07
Disc.CD No.474, Dt. 28.12.07, Tadepalligudem (Andhra Pradesh)

समयः 00.00-1.45

जिज्ञासु-बाबा, अभी हमको संगमयुग में स्वंय भगवान बाप के रूप में, टीचर के रूप में, सदगुरू के रूप में पढ़ाता है करके हमको कैसे पता चलेगा?

बाबा- कि बाप हमको पढ़ाता है?

जिज्ञासु- हाँ।

बाबा- जो बाप है सारी सृष्टि का बाप है ना। कि दो, चार, आठ, सौ, दो सौ, करोड़, दो करोड़, दो-पांच सौ का बाप है। सबका बाप है। तो जो सबका बाप है और वो हमको पढ़ाता है बेहद का बाप। और हम ये कहें कि ये हमारा बाप है। तो कैसे पता चले ये हमारा बाप है। तो उसको पढ़ाई पढ़ाना शुरू कर दो। क्या? अगर उसको तुम पढ़ाई पढ़ाय लेते हो। या तुम्हारे मित्र, संबंी उसको पढ़ाई पढ़ाय देवें। तो बाप नहीं है। अगर वो तुम्हारे मित्र संबंियों को पढ़ाई पढ़ाय देवे परंतु उसको पढ़ाई न पढ़ा पावे। तो बाप है। जो सुप्रीम टीचर होगा उसका कोई टीचर होगा क्या? उसका कोई टीचर नहीं हो सकता।

Time: 00.00-1.45
Student: Baba, how will we know that God Himself teaches us in the form of a father, a teacher, and Sadguru in the Confluence Age?
Baba: That the Father teaches us?
Student: Yes.
Baba: The Father is the father of the entire world, isn't He? Or is He the Father of two, four, eight, hundred, two hundred, crore, two crores, two-five hundred? He is the Father of everyone. So, the one who is everybody's father, that unlimited Father teaches us. And if we say that He is our Father, then how will we know that He is our Father? So, start teaching Him. What? If you are able to teach Him or if your friends, relatives are able to teach Him, then He is not a Father. If He is able to teach your friends and relatives, but if nobody is able to teach Him, then He is the Father. Will the Supreme Teacher have a teacher? He cannot have any teacher.

समय- 01.52- 09.15

जिज्ञासु- बाबा दत्तात्रेय.....

बाबा- दत्ता माना दिया हुआ और त्रे माना तीन का। दो शब्द हैं। दत्ता और त्रेय। माना तीन का दिया हुआ। दुनियाँ में कौन तीन मुख्य हैं? ब्रह्मा, विष्णु और शंकर। यज्ञ के आदि में वो तीन आत्मायें होती हैं। जिनके द्वारा त्रिमूर्ति बाप प्रत्यक्ष होते हैं। बाप अकेला नहीं आता है। तीन मूर्तियों के साथ आता है। उन तीन मूर्तियों के द्वारा जो दिया गया।

Time: 01.52-09.15
Student: Baba *Dattatrey*.....
Baba: *Datta* means 'given' and 'Treya' means 'by three'. There are two words. *Datta* and *Treya.* It means given by three. Who are the three main ones in the world? Brahma, Vishnu and Shankar. In the beginning of the yagya those three souls are present through whom the

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Trimurty Father is revealed. The Father does not come alone. He comes with three personalities. [He is] the one, who was given by those three personalities.

यज्ञ के आदि में बुद्धि ले जायें वो तीन मूर्तियाँ आदि में भी थीं और अंत में भी तीन मूर्तियाँ होंगी। जिनका गायन होगा- विश्व विजय करके दिखलावें। कौन? तीन मूर्तियों का यादगार जो तीन प्रकार का कपड़ा है। ब्रह्मा के रंग का हरा कपड़ा। विष्णु के रंग का सात्विक सफेद कपड़ा और शंकर के रंग का क्रांतिकारी लाल कपड़ा। कपड़ा माना? शरीर रूपी वस्त्र। नहीं तो कपड़े का झंडा विश्व विजय नहीं करता है। कोई तीन शरीर रूपी वस्त्र हुए हैं जिन्होंने सारे विश्व के ऊपर विजय पाई है। और उन तीन के पुरूषार्थ से जो नई दुनियाँ बनी उस नई दुनिया में राजा बनता है कौन? कृष्ण। तीन के पुरूषार्थ से जो भी नई दुनिया तैयार होती है सतयुग की। उसमें मुखिया कौन होता है? कृष्ण।

If we take our intellect to the beginning of the yagya, those three personalities were present in the beginning of the yagya and the three personalities will be present in the end as well, [they are the ones] who will be praised as - the one who gain victory over the world. Who? The memorial of the three personalities in the form of the three kinds of clothes: green cloth representing Brahma's colour; pure white cloth representing Vishnu's colour and the revolutionary red cloth representing Shankar's colour. What does cloth mean? Cloth like body. Otherwise, a flag made of cloth does not gain victory over the world. There have been three cloth-like bodies which have gained victory over the entire world. And the new world that was established through the *purusharth (*special effort for the soul) of those three; who becomes a king in that new world? Krishna. Who is the chief in the Golden Age new world that is established through the efforts of the three? Krishna.

और यज्ञ के आदि में भी उन तीन मूर्तियों के द्वारा बाप प्रत्यक्ष होता है। भले बच्चे पहचाने या न पहचाने। तीन मूर्तियों के साथ आता है। और वो तीन मूर्तियाँ..... उनकी देन क्या है? क्या देकरके चली जाती हैं। वो तीन मूर्तियाँ थीं जो सन् 47 तक कुछ देके चली गईं। किसको देके चली गईं? अरे! तीनों मूर्तियाँ सन् 47 से पहले चली गईं या नहीं चली गईं? उन तीन मूर्तियों के द्वारा त्रे दत्ता दिया हुआ। तो तीन मूर्तियाँ क्या देकर चली गईं यज्ञ में? अरे! कृष्ण को देकर चली गईं ना। ब्रह्मा को देकर चली गईं ना। तीन मूर्तियों के द्वारा सारा यज्ञ किसने सम्भाला? ब्रह्मा ने सम्भाला। माना कृष्ण की आत्मा ने सम्भाला।

And in the beginning of the *yagya* too, the Father is revealed through those three personalities, the children may or may not recognize Him. He comes with the three personalities. And those three personalities....what is their gift? What do they give and depart? There were those three personalities, who gave something until (19)47 and departed. What did they give and depart? Arey, did the three personalities depart before (19)47 or not? *Trey*, i.e. three, *datta*, i.e. given; given by those three personalities. So, what did the three personalities give to the *yagya* and depart? Arey! They gave Krishna and departed, didn't they? They gave Brahma and departed, didn't they? Who took care of the yagya through the three personalities? Brahma took care, i.e. the soul of Krishna took care.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

सन् 47 में जो भी नई दुनियाँ का सैम्पल बना ब्राह्मणों की दुनियाँ में। उस नई दुनियाँ के सैम्पल को सम्भालने वाला मुखिया कौन था? ब्रह्मा। वो गुण □ारण करता था या अवगुण □ारण करता था? गुण □ारण करता था। तो जो गुण ही □ारण करे किसीके अवगुण □ारण न करे उसका नाम क्या रख दिया है शास्त्रों में? दत्तात्रेय। तीन मूर्तियों के द्वारा दिया हुआ। वो कृष्ण का पार्ट दत्तात्रेय का पार्ट है संगमयुग में। जिसने सदैव गुणों को □ारण किया। और कुत्तों को पालता था। क्या? दत्तात्रे के आस-पास कौनसे जानवर दिखाए जाते हैं? कुत्ते। कृष्ण और क्राईस्ट की राशि मिलाई जाती है। मिलाई जाती है कि नहीं? क्रिश्चियनस कौनसे जानवर को ज्यादा प्यार करते हुए देखे जाते हैं? कारों में लिए-2 फिरते हैं कुत्तों को। तो कुत्तों के अवगुण को नहीं देखा। जो द्वैतवादी दुनियाँ का बीज है।

The sample of new world that was prepared in the world of Brahmins in (19)47; who was the chief care taker of the sample of that new world? Brahma. Did he used to inculcate virtues or vices? He used to inculcate virtues. So, what was the one who inculcates only virtues, who does not inculcate anybody's vices, named in the scriptures? Dattatreya. The one, who was 'given' by the three personalities. That part of Krishna, that part of Dattatreya is played in the Confluence Age. The one who always inculcated virtues. And he used to sustain dogs. What? Which animals are shown around Dattatreya? Dogs. The horoscopes of Krishna and Christ are matched. Are they matched or not? Which animals are Christians seen to love more? They take dogs along with them in cars. So, he (Krishna) did not see the vices of dogs; the one who is a seed of the dualistic world.

कुत्ते में कौनसा विकार प्र□ान होता है? काम विकार। और जब द्वैतवादी द्वापर की दुनियाँ, नर्क की दुनियाँ शुरू होती है। तो कौनसी आत्मा आती है जिससे काम विकार की दुनियाँ में शुरूवात हो जाती है? कामी इस्लामी। उन तीन श्रेष्ठ मूर्तियों के द्वारा दिया हुआ दत्तात्रेय उसको कामी कुत्तों ने घेर लिया। परंतु वो सबके गुण देखता रहा कोई के भी अवगुण नहीं देखे। इसीलिए वो गायन हुआ है। दत्तात्रेय। कोई भी हो, कैसा भी हो हमें उसके गुण देखने हैं अवगुणों की आँख बंद हो जाए।

Which vice is dominant in a dog? The vice lust. And when the world of dualistic Copper Age, the world of hell begins, which soul comes and introduces lust in the world? The lustful Islamic soul. Dattatreya, who was 'given' by those three righteous personalities, was surrounded by the lustful dogs. But he continued to see everybody's virtues, he did not see anybody's vices. This is why he is famous as Dattatreya. We should see the virtues of every person, however that person may be; the eyes that see vices should be closed.

समय- 09.20-22.40

जिज्ञासु- बाबा, संगमयुगी कृष्ण, सतयुगी कृष्ण कैसे पता पड़ेगा?

बाबा- जो कलियुगी कृष्ण होगा। जो गीता का भगवान बनकरके बैठ जाता है; **ysfdu** वास्तव में गीता का भगवान होता नहीं है। झूठी गीता, और झूठी गीता बनती है कृष्ण का नाम डालने से। एक कृष्ण की बात है या नम्बरवार सभी कृष्ण जैसे बच्चों की बच्चा बुद्धियों की

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बात है? नम्बरवार बच्चा बुद्धि रूपी कृष्ण हैं जो माताओं को अपनी मुठ्ठी में कर लेते हैं और उनको अंगुली के इशारे पर चलाते हैं।

Time: 09.20-22.40

Student: Baba, how will we know about the Confluence Age Krishna, Golden Age Krishna?

Baba: The one who is Iron Age Krishna, who sits as God of the Gita; he is not actually God of the Gita. There is false Gita and Gita becomes false by inserting the name of Krishna in it. Is it about one Krishna or is it about all the number wise Krishna-like children having child-like intellect? There are number wise Krishna having child-like intellect who take the mothers in their control and make them follow their directions.

आज घर-2 में यही हालत है। खुदा न ख्वास्ता पति शरीर छोड़ देता है। तो मातायें किसके अंडर में आ जाती हैं? बच्चों के अंडर में आ जाती हैं। बच्चे जैसे माता के पति बनकरके बैठ जाते हैं, मालिक बनकर बैठ जाते हैं। और ये परम्परा भारतवर्ष में 2500 साल तक चली है। परिवारों में माताओं को वर्सा नहीं मिला। वर्सा बच्चों को मिलता रहा क्योंकि बच्चे माताओं के पति बनकरके बैठ गए। और अभी भी घर-2 में बच्चे माँ को उंगली के इशारे पर नचाते हैं। और सारी प्रॉपर्टी के हकदार खुद बनकर बैठ जाते हैं। ये तो बाप है जबसे इस दुनियाँ में प्रत्यक्ष होता है तो बाप के आने से आज की गवर्मेन्ट ने भी ये नियम बनाया है कि माताओं को भी वर्सा मिलना चाहिए। तो माताओं को भी कानून बन गया है कि चाहे तो वो अपना वर्सा पारिवारिक वर्सा अपने हाथ में ले सकती है।

This is the situation in every home today. By chance, if the husband leaves the body, then under whose control do the mothers live? They come under the control of the children. It is as if the children become the mother's husband. They become her lord. And this tradition has been followed in India for 2500 years. Mothers did not get inheritance in the family. Sons have been getting inheritance because sons became the husbands (i.e. controllers) of mothers. And even now, in every house the sons make the mothers dance on their fingertips (i.e. directions). And they become the inheritors of the entire property themselves. Thanks to the Father that ever since He is revealed in the world, ever since the Father came, today's Government has also made it a rule that even the mothers should get the inheritance. So, there is a law in favour of the mothers too that if they wish they can take their inheritance, their family inheritance in their hands.

ये लौकिक दुनियाँ की बात नहीं है वास्तव में ये अलौकिक दुनियाँ की बात है। अलौकिक दुनियाँ में बाप प्रत्यक्ष हो चुका है मातायें जिनकी अपनी कोई परिवार में इच्छा नहीं रह जाती। वो चाहें तो स्वतंत्र होकरके अपना जीवन व्यापन कर सकती हैं। ईश्वरीय ज्ञान में चल सकती हैं। उनको उन कृष्ण बच्चों के अंडर में रहने की दरकार नहीं है। बाप का आसरा ले सकती हैं; परंतु बाप को पहचानेंगे तब। तो वो कृष्ण बच्चा है बच्चा बुद्धि। इसीलिए माता की कदर नहीं करता।

It is not about the *lokik* world; actually, it is about the *alokik* world. The Father has been revealed in the *alokik* world; mothers, who do not have any more desires in their family, can lead their life independently if they wish. They can follow Godly knowledge. They need not remain under those Krishna [-like] sons. They can take the support of the Father, but only

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

when they recognize the Father. So, that child Krishna has a child-like intellect. This is why he does not give regard to the mother.

यज्ञ में भी यज्ञ के आदि में जो मातायें थीं उनकी कदर नहीं हुई और वो मातायें आज भी यज्ञ में पुरूषों के द्वारा चलाई जा रही हैं। इसीलिए अव्यक्त वाणी में इशारा भी दे दिया- पांडवों को शक्तियों का गार्ड बनकर रहना है। गार्ड दास को कहा जाता है, सेवक को कहा जाता है। पांडवों को शक्तियों का सेवक बनकरके रहना है, गार्ड बनकर रहना है। अगर पांडव शक्तियों को गाइडेन्स देने वाले गाईड बनेंगे, मालिक बनेंगे तो यज्ञ में गड़बड़ पड़ जावेगी। वो गड़बड़ी अभी यज्ञ में पड़ी हुई है। बेसिक में ही नहीं पड़ी हुई है। एडवांस में भी वो गड़बड़ी चल रही है।

Also in the yagya, the mothers who were present in the beginning of the *yagya* were not respected and even today those mothers are being controlled by the men in the *yagya*. This is why it has been hinted in the *Avyakta Vani* – Pandavas should be the guards of *shaktis*. Guard means a slave, a servant. Pandavas should be the servants of *shaktis*; they should be their guards. If Pandavas become guides who give guidance to the shaktis, if they become their lords, then there will be anarchy in the *yagya*. That anarchy is still going on in the *yagya*. It is not just the case with the basic (party); that anarchy is going on in the advance (party) too.

यज्ञ के आदि में भी जिन कृष्ण बच्चों ने, बच्चा बुद्धियों ने, और कृष्ण बच्चे के फॉलोवर्स ने बाप को नहीं पहचाना तो बाप का तिरस्कार हो गया और बाप चला गया और मातायें बं□न में आ गईं। उन दुर्यो□नों दु:शासनों ने भगवान बाप का तिरस्कार किया और कृष्ण बच्चे को गीता माता का भगवान बनाके बैठाए दिया। अब बच्चा क्या पढ़ाई पढ़ावेगा।

Even in the beginning of the *yagya* those Krishna-like children, those with a child-like intellect, and the followers of child Krishna did not recognize the Father; so, there was disregard (*tiraskaar*) of the Father and the Father departed and the mothers came under bondage. Those Duryodhans and Dushasans ignored God, the Father and they made child Krishna the God of the mother Gita. Well, how can a child teach?

कृष्ण उर्फ ब्रह्मा बच्चा बुद्धि के रथ के द्वारा शिव बाप ने मुरली तो चलाई। उनकी आत्मा ने, उनके कानों ने सबसे पहले मुरली सुनी। किसने? ब्रह्मा उर्फ कृष्ण ने। मुरली सुनी और मुरली सुनाई; लेकिन न समझी और न समझाई। बच्चा बुद्धि सुन सकता है। सुने हुए को सुना सकता है; लेकिन भगवान बाप की वाणी की गहराई को समझ भी नहीं सकता और समझा भी नहीं सकता। परंतु ये शूटिंग हो जाती है जो भक्तिमार्ग में शूटिंग होती रही। सुनने सुनाने की शूटिंग होती रही भक्तिमार्ग वाली या शास्त्रों में जो लिखा है उसको समझने और समझाने की शूटिंग हुई? सुनने सुनाने की शूटिंग हुई। गुरूजी ने सुनाया रावण को दस सिर थे। सत वचन महाराज। गुरूजी ने सुनाया कुम्भकरण 6 महीने सोता था। सत वचन महाराज। हनुमान पुँछड़ी वाला था। भगवान ने बंदरों की सेना ली। सत वचन महाराज। सुना और सत सत किया समझा तो नहीं।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Father Shiv narrated murli through the chariot of Krishna alias Brahma who has a child-like intellect. First of all his soul listened to the murlis through his ears. Who? Brahma alias Krishna. He heard the murlis and narrated the murlis, but he neither understood them nor explained them. A person with a child-like intellect can hear. He can narrate something which he has heard. But he can neither understand nor explain the depth of the words of God the Father. But this shooting takes place, which continued to take place in the path of bhakti. Did the shooting of listening and narrating of the path of bhakti take place or did the shooting of understanding and explaining whatever has been written in the scriptures take place? The shooting of listening and narrating took place. Guruji narrated that Ravan had ten heads. (The disciple said) *Sat vachan maharaj* (whatever you say is truth Maharaj). Guruji said that Kumbhakarna used to sleep for 6 months. *Sat vachcn maharaj*. Hanuman had a tail. God took the help of an army of monkeys. *Sat vachan maharaj*. He heard and believed everything to be true. He did not understand.

समझने और समझाने को ज्ञान कहा जाता है। और ज्ञान देने वाला एक ज्ञान सागर बाप ही है कृष्ण नहीं है। लेकिन ब्राह्मणों की जो बेसिक दुनियाँ है उसमें गीता का साकार भगवान किसको समझा जाता है, किसको समझते हैं? कृष्ण उर्फ दादा लेखराज को गीता का साकार भगवान अभी भी समझते हैं। बेसिक में ही नहीं एडवांस की दुनियाँ में जो चंद्रवंशियों के बीजरूप आत्मायें हैं वो अभी भी कृष्ण की आत्मा को भगवान के रूप में मानती है। और राम बाप की अवज्ञा करती है। जबकी राम वाली आत्मा के तन के द्वारा कृष्ण बच्चे की आत्मा भी अभी पढ़ाई पढ़ रही है। और राम बाप के द्वारा शिव बाप टीचर बनकरके पढ़ाई पढ़ाता है। इसीलिए मुरली में बोला है। नेक्स्ट टू गॉड इस कृष्ण। कौनसा कृष्ण? संगमयुग में जो 16 कला सम्पूर्ण बन जाता है। दादा लेखराज ब्रह्मा उर्फ कृष्ण का तो शरीर ही छूट गया। 16 कला सम्पूर्ण बनने की बात खतम हो गई।

Understanding and explaining is called knowledge. And the giver of knowledge is one ocean of knowledge, the Father, not Krishna. But in the basic world of Brahmins, who is considered to be the corporeal God of the Gita? Even now they consider Krishna alias Dada Lekhraj the corporeal God of the Gita. It is not just in basic (knowledge) but [also] in the world of advance, the seed-form souls of *Chandravanshis* (those who belong to the Moon Dynasty) accept the soul of Krishna God and they disobey the father Ram, whereas the soul of child Krishna is still studying through the body of the soul of Ram. And the Father Shiv teaches knowledge through father Ram as a teacher. This is why it has been said in the murlis – next to God is Krishna. Which Krishna? The one who becomes perfect in 16 celestial degrees in the Confluence Age. Dada Lekhraj Brahma alias Krishna left his body. The issue of (Dada Lekhraj) becoming perfect in 16 celestial degrees ended there.

नेक्सट् टू गॉड इस नारायण। जो गायन है नर से नारायण बनने का। ब्रह्मा नर था;लेकिन नर चोला ही खतम हो गया तो नारायण कौन बनेगा। तो नेक्सट् टू गॉड इस नारायण ये ब्रह्मा के लिए बात लागू नहीं होती। नेक्सट् टू गॉड इस प्रजापिता। यज्ञ के आदि में पिता कोई और था। वो पिता का टाईटल ब्रह्मा बाबा को दे दिया गया। टाईटल□ारी था प्रजापिता। ओरिजनल प्रजापिता नहीं था। इसीलिए बोला है नेक्सट् टू गॉड इस प्रजापिता। जो यज्ञ के आदि में

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

मम्मा बाबा को भी डायरेक्शन देने वाला था। टीचर बनकरके बैठता था। वही आत्मा शरीर छोड़कर फिर दुबारा यज्ञ में आती है। और प्रजापिता के रूप में संसार में प्रत्यक्ष हो जाती है। तो नेक्सट् टू गॉड इस प्रजापिता और उसी प्रजापिता के द्वारा शिव बाप पढ़ाई पढ़ाकरके नर को नारायण बनाता है। इसीलिए नेक्सट् टू गॉड इस नारायण कहा। बाकी दादा लेखराज के लिए ये नेक्स्ट गॉड साबित नहीं होता। इसीलिए संगमयुगी कृष्ण अलग और सतयुग में जन्म लेने वाला कृष्ण वो आत्मा अलग। उसका कोई गायन नहीं है। संगमयुगी कृष्ण का शास्त्रों में गायन है। जिसके पीछे कंसी, जरासिं□ी मारने के लिए पीछे2 फिरते रहते थे।

Next to God is Narayan. The praise that *Nar* (man) became Narayan…. Brahma was a man, but when the male body itself perished, who will become Narayan? So, the saying that 'next to God is Narayan' is not applicable to Brahma. Next to God is Prajapita. In the beginning of the yagya, the father was someone else. That title of the father was given to Brahma Baba. He was the titleholder Prajapita. He was not the original Prajapita. This is why it has been said 'next to God is Prajapita'. The one who used to give directions to Mamma as well as Baba in the beginning of the yagya, the one who used to sit as their teacher, that very soul, after leaving its body, enters the yagya once again and is revealed in the world in the form of Prajapita. So, next to God is Prajapita and the Father Shiv teaches knowledge through that Prajapita and transforms man to Narayan. This is why it was said 'next to God is Narayan'. As regards Dada Lekhraj, he does not prove to be next to God. This is why the Confluence Age Krishna and the soul of Krishna who takes birth in the Golden Age are different. There is no praise for him. The Confluence Age Krishna, whom the Kansis and Jarasindhis chased (and tried) to kill, is praised in the scriptures.

समय-25.40-28.40

जिज्ञासु- बाबा, मुरली तो कोई मिस नहीं करते। जब तबीयत ठीक नहीं रहती तो आप से घर में पढ़के सेंटर में जा सकता है कभी । ऐसे जानबूझकर हमलोग मुरली मिस नहीं करेंगे सेंटर जाने के लिए, पढ़ने में, गीता पाठशाला। तबीयत ठीक रहेगा तो जायेंगे नहीं तो कभी-2.....

बाबा- ये तो आत्मा की पावर की बात है। श्रद्धा विश्वास की बात है, निश्चय बुद्धि की बात है। नहीं तो मुरली में तो बोला हुआ है 106 डिग्री बुखार हो तो भी रोज क्लास करना चाहिए जाकरके।

जिज्ञासु- जानबूझके नहीं बैठेंगे।

Time: 25.40-28.40

Student: Baba, nobody misses Murli. When someone does not feel well, he can read at home and then go to the center (when he is well). We don't miss the Murli class that we attend at the center or *gitapathshala* deliberately. If we feel well, we will go, otherwise sometimes……

Baba: It is about the power of the soul. It is about devotion and faith; it is about having a faithful intellect. Otherwise, it has been said in the Murli that even if you have 106 degree fever, you should attend the daily class.

Student: We will not sit (at home) deliberately.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा- अरे! 106 डिग्री तो छोड़ो 100 डिग्री, 99 डिग्री होता है तो भी □रे रह जाते हैं। नहीं तो हिम्मते बच्चे मददे बाप। हिम्मत हार जाते हैं।

जिज्ञासु- बुखार को छोड़िए ना। कभी घाव लगेगा शरीर को, एक्सीडेन्ट होगा तब चल नहीं सकेगा तो भी मंजूर कर सकता है ना। घर में बैठके पढ़ेंगे।

बाबा- बहानेबाजियाँ तो होती हैं।

जिज्ञासु- जानबूझके नहीं करेंगे ना बाबा।

बाबा- अरे! एक्सीडेन्ट रोज होता रहता है क्या?

जिज्ञासु- रोज का मतलब नहीं कभी-2। रोज का बात कैसे होगा। मुरली तो ब्राह्मणों का आहार है। छोड़ेंगे नहीं.....

Baba: Arey, leave about 106 degree (fever), even if they have 100 degree, 99 degree (fever) they sit at home. Otherwise, if children show the courage, the Father is ready to help. [But] they lose courage.
Student: Leave about fever. Sometimes, we suffer injuries to the body; if we meet with an accident, we will not be able to walk; then is it ok to sit and study at home?
Baba: All these are excuses.
Student: We will not do it deliberately Baba.
Baba: Arey! Do you meet with an accident daily?
Student: It is not about everyday; sometimes. How can it be everyday? Murli is the food for the Brahmins. We will not leave it….

बाबा- जो करेगा सो पाएगा। जितना कायदा उतना फायदा। कायदा है कि स्टुडेन्ट को रेग्युलर रहना चाहिए, पंच्युअल रहना चाहिए। रोज क्लास में आता है माना रेग्युलर है। और टाईम से आता है माना पंच्युअल है। अगर रोज नहीं आता है और टाईम से नहीं आता है। और क्लास शुरू हो जाता है। बाद में आता है इसका मतलब पंच्युअल नहीं है डिसरिगार्ड करता है। एक बार डिसरिगार्ड करेगा कहेगा एक्सिडेन्ट हो गया। दूसरी बार डिसरिगार्ड करेगा कहेगा एक्सीडेन्ट हो गया। तीसरी बार डिसरिगार्ड करेगा। तो टीचर कहाँ तक माफ करता रहेगा। टीचर खुश होगा? कभी खुश नहीं होगा।

Baba: The one who puts in effort will achieve [the reward]. The more you follow the rule, the more benefits you reap. The rule is that the student should be regular, punctual. If he comes to the class daily; it means that he is regular. And if he comes on time, it means that he is punctual. If he does not come daily and if he does not come on time, and if the class starts and if he comes late, then it means that he is not punctual; he shows disregard (for the teacher). If he shows disregard once, he will say that he met with an accident (as an excuse). If he shows disregard for the second time, he will say he met with an accident. If he shows disregard for the third time, how far will the teacher continue to excuse? Will the teacher be happy? He will never be happy.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समय- 28.50-43.40

जिज्ञासु- यमुना नदी कौन है?

बाबा- यमुना नदी कौन है? कहते हैं- तीन नदियों का संगम होता है उसमें कुम्भ का मेला होता है। गंगा, यमुना और सरस्वती। उनमें गंगा नदी पतित-पावनी के कार्य में अव्वल मानी जाती है। यमुना नदी भी पतित-पावनी मानी जाती है; लेकिन अव्वल नंबर नहीं मानी जाती। गंगा जिस क्षेत्र से बहती है वो ऐसी □रणी है, ऐसी जमीन है जो बालू में बहती है। रेत में, सेंड में। वो ऐसी देहअभिमान की मिट्टी में बहती है। जो मिट्टी चिपकती नहीं है। क्या? गंगा नदी की देहअभिमान की मिट्टी तो है; लेकिन ऐसी मिट्टी है जो देह में चिपकती नहीं है। थोड़ा पानी डालो सारा बह जाता है। थोड़ा सा ज्ञान जल डालो। और यमुना नदी की मिट्टी ऐसी देहअभिमान वाली है इतनी चिकनी है कि जहाँ चिपक जाएगी पकड़के रख लेगी।

Time: 28.50-43.40

Student: Who is river Yamuna (in an unlimited sense)?

Baba: Who is river Yamuna? It is said that the fair of Kumbh (*mela*) is organized at the confluence of the three rivers – Ganga, Yamuna and Saraswati. Among them river Ganga is considered to be number one in the task of purifying the sinful ones. River Yamuna is also considered to be purifier of the sinful ones, but it is not considered to be number one. The region through which river Ganga flows is such a land that it flows on sand. It flows on the soil of body consciousness, which does not stick. What? The mud of river Ganges is no doubt body conscious, but it is such a mud which does not stick to the body. If you pour some water, it is washed away entirely. If you put a little water of knowledge [it is washed away]. And the mud of river Yamuna is so body conscious, it is so sticky that wherever it sticks, it will remain stuck [there].

अब वो नदी चैतन्य होती है या जड़ नदी की बात है? ये चैतन्य नदियों की बात है। कोई चैतन्य नदियाँ ऐसी हैं जो देहअभिमान की मिट्टी में जकड़ लेती है ज्ञान सुनने वालों को, ज्ञान स्नान करने वालों को। और कोई ज्ञान गंगायें ऐसी हैं कि देहभान तो है आखिर कलियुगी दुनियाँ के हैं; लेकिन ऐसा देहअभिमान नहीं जो कोई को अपनी जकड़ में जकड़ के रख ले, पुरूषार्थ से नीचे गिरा दे। पहले जन्म होता है यमुना का। बाद में गंगा का। इसीलिए मुरली में बोला है ज्ञान गंगायें निकली हैं अंत में। अभी भी ज्ञान गंगा प्रत्यक्ष नहीं हुई है। इसीलिए उत्तर भारत के कुम्भकरण अभी भी सोए हुए हैं। गंगा नदी के किनारे जो कुम्भकरण रूपी सन्यासी हैं वो चौकड़ी मारके बैठते हैं वो गंगा की औलाद अपन को कहते हैं। वो यमुना के किनारे चौकड़ी मारकर नहीं बैठते हैं।

Well, is it about a living river or a non-living river? It is about the living river. There are some living rivers which bind the listeners of knowledge, the ones who take the bath of knowledge in the mud of body consciousness. And some Ganges of knowledge are such ones that they do have body consciousness; after all they belong to the Iron Age world, but their body consciousness is not such that they bind someone in their clutches and make them go down in their *purusharth* (special effort for the soul) . First Yamuna takes birth and later on Ganga. This is why it has been said in the Murli that the Ganges of knowledge have emerged in the end. Even now the Ganges of knowledge is not revealed. This is why the

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Kumbhakarnas[1] of north India are sleeping. The Kumbhakarna-like sanyasis who sit on the banks of river Ganga call themselves the children of Ganga. They do not sit on the banks of Yamuna.

यमुना नदी सूर्यपुत्री कही जाती है। पहले-2 जन्म होता है यमुना नदी का। मुरली में भी मिसाल दिया हुआ है- यज्ञ के आदि में पहले-2 निकली एक भंगिन, मेहतरानी। संतसंग में आती थी और आते ही बाबा के गले लिपट जाती थी सबके सामने। बादमें उसके परिवार वाले आए और ज़बरदस्ती पकड़के ले गए। ये तो बेसिक की बात हुई। एडवांस में भी एडवांस के आदि में कोई कन्या के रूप में कोई माता थी जो फट से एडवांस में चटक पड़ी। परंतु जो जन्म-जन्मांतर के उसके भाँती थे। उन्होंने उसको ज्ञान में टिकने नहीं दिया। और खुद भी नीचे गिरे और उसको भी नीचे गिरा दिया। ये गंगा, यमुना की बात है। जिसे शास्त्रों में तुलसी का भी नाम दिया है।

River Yamuna is called *Suryaputri* (daughter of the Sun). First of all river Yamuna takes birth. An example has also been given in the Murli – In the beginning of the *yagya* first of all a *Bhangin* (a woman belonging to one of the lowermost castes among Hindus), *mehtarani* (scavenger) came. As soon as she used to come to the *Satsang* (spiritual gathering) she used to embrace Baba in front of everyone. Later on her family members came and took her away forcibly. This is about the basic (knowledge). Even in the advance (party), in the beginning of the advance (party) there was a mother in the form of a virgin who entered the advance (party) suddenly. But her companions of many births did not allow her to remain constant in knowledge. They themselves experienced downfall and made her to experience downfall too. This is about Ganga, this is about Yamuna, who has also been named 'Tulsi' in the scriptures.

गंगा, यमुना और सरस्वती। सरस्वती बीच में आती है और बीच में ही लोप हो जाती है। बेसिक में भी ओमराधे मम्मा आदि में नहीं थी। बाद में आई और ब्रह्मा बाबा से पहले ही शरीर छोड़के बीच में ही चली गई। एडवांस में भी जो सरस्वती जगदम्बा के रूप में प्रत्यक्ष होती है वो भी बीच में ही आती है और बीच में ही लोप हो जाती है। जिस जगदम्बा के लिए बोला है कि जगदम्बा अंत में महाकाली का रूप धारण करेगी। जगदम्बा कहो, सारे जगत की अम्बा कहो।

Ganga, Yamuna and Saraswati. Saraswati comes in between and vanishes in between. Even in basic (knowledge) Om Radhey Mamma was not present in the beginning. She came later on and departed in between, leaving her body before Brahma Baba. Even in advance, the one who is revealed in the form of Saraswati Jagdamba comes in between and vanishes in between. It has been said for that Jagdamba that Jagdamba will assume the form of Mahakali in the end. Call her Jagdamba, or call her the mother of the entire world.

[1] The demon king who used to sleep for 6 months.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

ब्रह्म माना बड़ी और मा माना माँ, बड़ी माँ कहो। इसीलिए मुरली में बोला है- वास्तव में ये ब्रह्मा तुम्हारी जगदम्बा है। वास्तव में ये दाढ़ी मूँछ वाला जो ब्रह्मा है ना ये तुम्हारी जगदम्बा है। क्योंकि जो सारे जगत की अम्बा होगी सब माताओं की माता होगी वो सबसे जास्ती सहन करने वाली होगी या कम सहन करने वाली होगी। सबसे जास्ती सहन करने वाली होगी। उसके मुकाबले न बेसिक में कोई सहन कर सकता। और न एडवांस में कोई ऐसी हस्ती है जो ब्रह्मा के मुकाबले सहन करने वाली हो या प्रत्यक्ष हो। इसीलिए बोला ये ब्रह्मा वास्तव में तुम्हारी जगदम्बा है परंतु तन पुरूष का है। इसीलिए कन्याओं माताओं के चार्ज में इस पुरूष तन को नहीं रखा जाता। इसीलिए ओमराधे मम्मा को टाईटलधारी जगदम्बा बनाए दिया। कन्याओं-माताओं की सम्भाल करने के लिए।

Brahm means big and *ma* means mother; call her senior mother. This is why it has been said in the Murli – In reality this Brahma is your Jagdamba. Actually this Brahma with beard and moustaches is your Jagdamba because will the mother of entire world, the mother of all mothers tolerate the most or will she tolerate less? She will be the one who tolerates the most. When compared to her, there is nobody who can tolerate (to that extent) in basic. And neither is there any personality in the advance (party), who can tolerate as much as Brahma nor is [anyone like that] revealed. This is why it has been said that this Brahma is in fact your Jagdamba, but the body is male. This is why this male body is not kept in charge (to take care) of the virgins and mothers. This is why Om Radhey Mamma has been made titleholder Jagdamba to take care of virgins and mothers.

अच्छा जब दाढ़ी मूँछ वाला ब्रह्मा जगदम्बा नहीं है। उसने पार्ट जगदम्बा का नहीं बजाया। और वास्तव में दाढ़ी मूँछ वाले की पूजा नहीं होती है। और जगदम्बा की तो पूजा होती है। तो वो जगदम्बा कौन है जिसकी मंदिरों में पूजा होती है मूर्तियाँ बनती हैं। वो वही जगदम्बा है जो यज्ञ के आदि में एक माता थी। जो मम्मा बाबा को भी पढ़ाई पढ़ाती थी। वही शरीर छोड़ने के बाद दुबारा एडवांस में आकर जन्म लेती है। और उसमें ब्रह्मा की सोल शरीर छोड़ने के बाद प्रवेश करती है। आदि में सतोप्रधान स्टेज में जो जगदम्बा है वो ही अंत में महाकाली का पार्ट बजाती है इसीलिए महाकाली के मस्तक पर ज्ञान चंद्रमाँ दिखाया जाता है। जैसे शंकर के मस्तक पर चंद्रमाँ है वैसे महाकाली....। महाकाल और महाकाली दोनों के मस्तक पर ज्ञान चंद्रमाँ प्रत्यक्ष है। कौन है ज्ञान चंद्रमाँ? ब्रह्मा बाबा। तो वो मंदिरों में पूजा जाता है। क्योंकि स्त्री चोला है।

OK, if the Brahma with beard and moustaches is not Jagdamba; he has not played the part of Jagdamba and actually the one with beard and moustache is not worshipped and Jagdamba is worshipped. So, who is that Jagdamba who is worshipped in the temples, and whose idols are made? She is the same Jagdamba who was a mother in the beginning of the yagya, who used to teach knowledge to even Mamma and Baba. After leaving her body, she comes again to the advance (party) and takes (the unlimited) birth. And the soul of Brahma enters her after leaving its body. The one who is Jagdamba in the beginning, in the *satopradhan* (the stage dominated by goodness and purity) stage, plays the part of Mahakali in the end. This is why the moon of knowledge is shown on the forehead of Mahakali. Just as there is the moon on the forehead of Shankar, similarly, Mahakali…… The moon of knowledge is visible on the

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

forehead of Mahakaal as well as Mahakali. Who is the moon of knowledge? Brahma Baba. So, he is worshipped in the temples because the body is female.

पुरूष सब दुर्यो□न दुःशासन है। पुरूष चोला और स्त्री चोला पवित्रता की □ारणा के हिसाब से ज्यादा तीखा कौन होता है? स्त्री चोला। और उसमें भी खास करके भारत की मातायें बहुत पवित्र गाई हुई हैं। इसीलिए यादगार में भारत की नदियों में स्नान करते हैं। विदेशों की नदियों में स्नान नहीं करते। क्यों? क्योंकि विदेशी जो चैतन्य नदियाँ हैं। वो अनेक पति करने वाली हैं, व्यभिचार फैलाने वाली हैं। और भारत की जो नदियाँ हैं वो जीवन में एक ही पति करती हैं। पवित्रता को □ारण करती है। इसीलिए यमुना नदी अंत में काला पार्ट बजाती है महाकाली के रूप में। इसीलिए वो जमुना है, काला पानी बहता है और गंगा जल पवित्र माना जाता है। बीच में सरस्वती नदी है वो सरस्वती नदी का पार्ट ही ऐसा है बीच में आती है बीच में लोप हो जाती है।

All men are Duryodhans and Dushasans. Among the male body and female body, who is faster from the point of view of practicing purity? The female body. And even in that, especially the mothers of India are known to be very pure. This is why as a memorial people bathe in the rivers of India. They do not bathe in the rivers of foreign countries. Why? It is because the living rivers of foreign countries adopt many husbands, they are the ones which spread adultery. And the rivers of India adopt only one husband in their life. They practice purity. This is why river Yamuna plays a dark part in the form of Mahakali in the end. This is why it is 'Jamuna', dark water flows through it and the water of Ganges is considered to be pure. The river Saraswati is in between. The part of river Saraswati is such that it comes in between and vanishes in between.

तो तीन नदियाँ हैं जो पतित-पावनी मानी जाती हैं। उनमें मुख्य गंगा है। वो ज्ञान गंगायें अभी प्रत्यक्ष नहीं हुई हैं। जब प्रत्यक्ष होंगी तो पहले-2 निकलेंगे सन्यासी जिन्होंने जन्म-जन्मांतर पवित्रता को □ारण किया है। भल झूठी पवित्रता को □ारण किया; लेकिन पवित्रता को फॉलो तो किया। इसीलिए बोला है जब सन्यासी निकलेंगे तो तुम बच्चों विजय हो जावेगी। क्या? एडवांस ज्ञान में भी जो सन्यास □र्म की जब बीजरूप आत्मायें निकलेंगी उत्तर भारत से। जो ज्ञान गंगा के किनारे चौकड़ी मारकरके बैठने वाली हैं तो तुम बच्चों की विजय हो जावेगी। तो गंगा में और यमुना में ये फर्क है।

So, there are three rivers which are considered to be purifier of the sinful ones. Among them main is Ganga. Those Ganges of knowledge are not revealed now. When they are revealed, then first of all the sanyasis will emerge who have imbibed purity for many births. Although they imbibed false purity, they did *follow* (practice) purity. This is why it has been said – when sanyasis emerge, you children will gain victory. What? Even in the advance knowledge, when the seed-form souls of sanyas religion emerge from northern India, the ones who sit on the banks of the Ganges of knowledge, then you children will become victorious. So, this is the difference between Ganga and Yamuna.

……..……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info